साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 47, अक्टूबर(द्वितीय) , 2018

पुस्तक समीक्षा

बाल मन का दर्पण 'आपका बंटी'

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में अपना विशिष्ट मुकाम बनाने वाली महिला कथाकारों में से एक मन्नू भंडारी अपनी अनुपम शैली के लिए विख्यात हैं।उनका लेखन चर्चित, प्रशंसित, मर्मस्पर्शी, एवं विचारोत्तेजक है, पाठक या श्रोता को अंदर तक झकझोरने वाला साहित्य है।उनका कथा संसार वास्तविकता का जीवंत दस्तावेज या सही मायनों में उस उपभोगतावादी समाज का दर्पण है जिसमें मानवीय संवेदनाओं को स्वार्थ की चक्की में निर्ममता से पीस दिया जाता है।

मन्नू भंडारी का लोकप्रिय उपन्यास 'आपका बंटी' 1970में प्रकाशित हुआ जो स्त्री-विमर्श और बाल-विमर्श दोनों को अपने कलेवर में समेटे है।इस उपन्यास की चर्चा के बिना बीसवीं शताब्दी के उपन्यास साहित्य की पूर्णता असंभव है।यह बाल-विमर्श की अमूल्य-कालजयी कृति है।बाल मनोविज्ञान की विशद व्याख्या को प्रथम बार चरितार्थ हिन्दी साहित्य में इस उपन्यास में ही किया गया है।

'आपका बंटी' उपन्यास का केंद्रीय पात्र बंटी है जिसके इर्दगिर्द संपूर्ण कथानक चक्कर काटता है।बंटी उसका दुलार या घरेलू नाम है,उसका असली नाम अरूप बत्रा है और स्कूल में इसी नाम से जाना जाता है।वह तलाकशुदा दम्पत्ति की इकलौती संतान है, जिसके शिक्षित और संभ्रांत माता-पिता निजी स्वार्थों तथा स्वतंत्रता को लेकर सात सालों तक बिना तलाक के ही दूर-दूर रह रहे थे।बंटी के पिता अजय बत्रा कोलकाता में डिविजनल मैनेजर और मां शकुन बत्रा एक कॉलेज में प्रिंसिपल हैं।दोनों आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं ऐसे में कोई किसी की धौंस या बात नहीं बर्दास्त करता है।अजय विवाहोत्तर मीरा नामक स्त्री से संबंध रखता है और अंततः शादी कर लेता है जिससे उसे जीनू नामक पुत्र की प्राप्ति होती है।

बंटी की मां शकुन बत्रा अजय के वकील मित्र जिसे बंटी वकील चाचा कहता है जो अजय और शकुन के। मध्यस्थ की भूमिका अदा करता है उसके कहने पर अजय को तलाक दे देती है।शकुन भी अजय के नक्शे-कदम पर चलते हुए दो बच्चों के विधुर बाप डॉक्टर जोशी से प्रेम कर बैठती है और जिसकी परिणिति विवाह के रूप में होती है।शकुन बत्रा मिसेज जोशी कहलाने लगती है।अजय-शकुन के बीच जो गहन तिमिरांध खाई बनती है उसमें गोते लगाने वाला नितांत निर्दोष, निरीह और असुरक्षित बंटी है जो अपने आस-पास जब उन बच्चों को देखता है जिनके माता-पिता साथ-साथ रहते हैं तो उसके अबोध मन में भी उत्सुकता उत्पन्न होती है कि मेरे ममी-पापा अलग-अलग क्यों रहते हैं?पापा जब आते हैं तो बाहर बुलाकर क्यों मिलते हैं?वह सोचता है कि क्या जैसे मैं और टीटू कुट्टी कर लेते हैं तथा कुछ देर बाद सारा झगड़ा खतम और फिर बोलचाल शुरू हो जाता है ऐसे ममी-पापा नहीं मिल सकते?बंटी कल्पनाशीलता के झिलमिल महल का राजकुमार होने के साथ-साथ वास्तविकता की कठोर भूमि पर कुलांचे भरने वाले मृगशावक की तरह है।

बंटी अपनी उम्र से कहीं अधिक समझदार है।वह कामकाजी तथा शिक्षित मां होने का दंश झेलता है, शकुन बंटी को सुविधाएं तो सभी मुहैया कराती है लेकिन वह ममता, प्रेम और दुलार नहीं दे पाती है जिसके कारण बंटी अकेला, असुरक्षित, उपेक्षित महसूस करता है।इस मानसिक रिक्तता की आंशिक पूर्ति बूढ़ी फूफी द्वारा की जाती है परन्तु जिससे उसको यह हक मिलना चाहिए उससे वंचित रह जाता है।बंटी होशियार है उसे बागवानी का बेहद शौक है जिसके कारण उसे अपने द्वारा लगाए गए बाग के सभी फूलों-पौधों के नाम मुँह जबानी याद हैं।

बंटी शकुन के पुनर्विवाहोपरांत डॉक्टर जोशी के घर सिफ्ट हो गया तब उसे अपना पुराना घर,माली दादा, ममी से नाराज होकर हरिद्वार गई फूफी,पुराने साथी कुन्नी और टीटू याद आते हैं।बंटी अपने को वहाँ एडजस्ट नहीं कर पाता है।शकुन के बार-बार समझाने पर भी वह न तो जोशी को पापा मानता है और न ही जोशी की बेटी जोत तथा शरारती बेटे अमि(अमित)को बहन-भाई ही स्वीकारता है।बंटी यह भी

अनुभव करता है कि ममी डॉक्टर के घर में आकर बदल गई है अब न तो उसे वे पहले जैसा प्यार करती है और न ही किसी को उसकी परवाह है।वह तो अनचाही वस्तु की तरह है जिससे सब छुटकारा पाना चाहते हैं।बंटी घुट-घुटकर जीता और उदासी की चादर में लिपटा हुआ यही सोचता है कि मेरा कसूर क्या है?

बंटी के पिता अजय बत्रा जब उसे लेने के लिए आते हैं तो सोचता है कि मां रोएगी, रोकेगी पर सोच के बिलकुल विपरीत व्यवहार पाता है तो प्रतिकार स्वरूप पिता के साथ कोलकाता चला जाता है।बंटी वहाँ भी मीरा(अजय की दूसरी पत्नी)को मन से मां नहीं पाता है।अंततः अजय बंटी को हॉस्टल रखने का फैसला कर लेता है क्योंकि वह मानता है कि अगर बंटी घर में रहेगा तो न तो इसका विकास हो पाएगा और मीरा असहज महसूस करेगी।

बच्चे दाम्पत्यजीवन में सेतु का काम करते हैं लेकिन इस उपयोगिता-उपभोगतावादी परिवेश में वही बच्चे किस प्रकार माता-पिता के भार बन जाते हैं यह बात इस उपन्यास में बखूबी दिखाया गया है।चौथी कक्षा में में पढ़ने वाला मासूम बंटी को जिस उम्र में बाल सुलभ शरारतें करनी चाहिए उस उम्र में वह डरा,सहमा अपने अस्तित्व को तलाशने में मशगूल था।बंटी एक पैंडुलम की मानिंद रिश्तों के बीच लेफ्ट-राइट कर रहा था।बचपन को निर्ममता से कुचल कर नश्तनाबूद करने की क्रिया को कलमबद्ध करने का प्रमाण है 'आपका बंटी'।बंटी को सबने आपका-आपका कहकर एक-दूसरे की तरफ केवल ढकेला है,किसी ने मन अपनाया नहीं है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें